प्रकरण
तकनीकी एवं गैर–तकनीकी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का अध्ययन

डॉ समीना कुरैशी
असिस्टेंट प्रोफेसर
जे ई एस कॉलेज, फरहदा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

संक्षेपीकरण (Abstract) :– जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति कोई न कोई व्यवसाय अपनाना होता है, ये जरूरी नहीं हैं, कि प्रत्येक व्यक्ति की व्यवसायिक रूचि भिन्न होती है। इस बात का प्रमाण भिन्न व्यक्तियों का विभिन्न व्यवसायों से जुड़ा होना है। विद्यार्थी और उनके अभिभावक व्यवसायिक आधार पर रूचि रखते हैं। व्यवसायिक रूचि के अंतर्गत प्रतिष्ठा पसन्द रूचि का विचार किया। व्यवसायिक शिक्षा के द्वारा अपनी रूचि के व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता रहती, प्रत्येक विद्यार्थी की यह रूचि रहती है कि वह अपनी रूचि और स्तर के अनुसार व्यवसाय चुने, अतः वे उसी विषय, का अध्ययन करते हैं। किन्तु इस कथन के विपरीत कुछ विद्यार्थी ऐसे है जो, अपने अभिभावक पर निर्भरत करते हैं। वे अपने अभिभावक की इच्छा पर आधारित व्यवसाय चुनते हैं, अतः वे अपनी रूचि के बिना उस व्यवसाय को अपनाते हैं और असफल होते हैं। इसलिए आवश्यक है कि अभिभावक और बालक के रूचि के अनुसार ही व्यवसाय चुना जाए।

महत्वपूर्ण शब्द (Key Words) :– तकनीकी एवं गैर–तकनीकी महाविद्यालय, विद्यार्थी, व्यवसायिक रूचि।

1. परिचय (Introduction) :– बालक का मस्तिष्क इतना परिपक्व नहीं हो पाता है कि वे अपनी इच्छा के अनुसार व्यवसाय चुनें, क्योंकि इसके बारे में उसे समुचित ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता, ऐसी अवस्था में बालकों को चाहिए कि वे अपने अभिभावक के निर्देशन के द्वारा व्यवसाय चुने, क्योंकि प्रत्येक अभिभावक की इच्छा रहती है कि उसके अनुसार बालक व्यवसाय चुने, ऐसा भी होता है, कि पैतृक व्यवसाय की प्रधानता होने के कारण बालक को सही मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। क्योंकि पीढ़ी दर पीढ़ी उस कार्य को करने के कारण उसी व्यवसाय पर निर्भर रहते हैं, दूसरे व्यवसाय के बारे में सोचा नहीं जाता है, जिससे कि बाद वाली पीढ़ी को अपने व्यवसाय चुनने में कठिनाई महसूस होती है। इसलिए आवश्यक है कि अभिभावक और बालक के रूचि के अनुसार ही व्यवसाय चुना जाये।

बालक की व्यवसायिक रूचि पर अभिभावकां की रूचि अत्यधिक प्रभावित हुई है। अभिभावक जो कुछ अपने जीवन में नहीं कर पाते, उसे पूरा करने की अपेक्षा अपनी संतानों से करते हैं, जिससे वे बालक के व्यवसाय के प्रति रूचि को प्रभावित करते हैं, जिससे व्यवसायिक रूचि प्रभावित होती है।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review Related Literature) :–

- मिश्र (1975) – अनुसूचित जाति के लोगों की व्यवसायिक रूचि व उसके स्थान का अध्ययन किया गया, जिसके परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुआ –

  "महत्वाकांक्षा के स्तर के कारण विभिन्न विषयों के संदर्भ में रूचि का विकास होता है।"

- परमाज (1976) – द्वारा व्यवसायिक रूचि व्यवसायिक संतुष्टि व्यवसायिक एफीसेंसी ऑफ नॉन प्रोफेशनल पर उच्च शोधकार्य किया गया, जिसका परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुआ –

  उच्चतम् व्यवसायिक रूचि वाले व्यक्ति सदैव उच्च पद पर आसीन होते हैं।

- राव (1978) – के द्वारा व्यवसायिक रूचि संतुष्टि पर शोधकार्य किया गया, जिसका परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुआ –

  1. व्यवसायिक महत्वाकांक्षा शिक्षा के स्तर पर होती है।
  2. उच्च मानसिक स्तर के व्यवसायिक व्यक्तियों का झुकाव शारीरिक कार्यों के प्रति कम रहता है।
  3. व्यवसायिक रूचि वाले व्यक्ति निजी व्यवसायों में रूचि नहीं रखते।

3. उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ (Objective And Hypothesis) :–

अध्ययन का उद्देश्य (Objective of the Study) :– लघुशोध प्रबन्ध हेतु चयन को समस्या में निम्नलिखित महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति अपेक्षित है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं –

- तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों के छात्रों की व्यवसायिक रूचि के मध्य अंतर ज्ञात करना।

- तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों की छात्राओं की व्यवसायिक रूचि के मध्य अंतर ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पना (Hypothesis of the Study) :–

H_1 – तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों के छात्रों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_2 – तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों की छात्राओं की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

4. प्रणाली एवं प्रक्रिया (Methodology And Procedure) :–

विधि (Method) :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं का चयन उद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।

जनसंख्या (Population) :– प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने दुर्ग–भिलाई शहर के तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया है।

न्यादर्श (Sampling) :– इस शोध अध्ययन में उद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा 60 तकनीकी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन तथा 60 गैर–तकनीकी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

विस्तार एवं सीमांकन (Scope And Delimitation) :– इसमें केवल तकनीकी एवं गैर–तकनीकी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों की "व्यवसायिक रूचि" तक ही सीमित है। इसमें 4 तकनीकी एवं 4 गैर–तकनीकी महाविद्यालयों का चयन किया गया है।

उपकरण (Tools) :– प्रस्तुत शोध कार्य मं विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि को जानने हेतु डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यवसायिक रूचि प्रपत्र का चयन किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधि (Statistical Techniques) :– इस अध्ययन में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं 'टी' मूल्य का प्रयोग किया गया है।

5. विश्लेषण एवं चर्चा (Analysis and Discussion) :–

प्रमाणित कल्पनाएँ (Verification of Hypothesis) :–

H_1 – तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों के छात्रों की व्यवसायिक रूचि के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

निष्कर्ष :– तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों के छात्रों की व्यवसायिक रूचि के गणित के संदर्भ में गणना की गई एवं 'टी' मूल्य 0.88 प्राप्त हुआ, जो (df – 58) 0.05 पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना H_1 गणित के संदर्भ में स्वीकृत की जाती हैं।

तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों के छात्रों की व्यवसायिक रूचि के विज्ञान के संदर्भ में गणना की गई एवं 'टी' मूल्य 1.80 प्राप्त हुआ, जो (df – 58) 0.05 पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना H_1 विज्ञान के संदर्भ में स्वीकृत की जाती है।

तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों के छात्रों की व्यवसायिक रूचि के अधिकारी के संदर्भ में गणना की गई एवं 'टी' मूल्य 1.55 प्राप्त हुआ, जो (df – 58) 0.05 पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना H_1 अधिकारी के संदर्भ में स्वीकृत की जाती है।

H_2 – तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों की छात्राओं की व्यवसायिक रूचि के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

निष्कर्ष :– तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों की छात्राओं की व्यवसायिक रूचि के गणित के संदर्भ में गणना की गई एवं 'टी' मूल्य 1.04 प्राप्त हुआ, जो (df – 58) 0.05 पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना H_2 गणित के संदर्भ में स्वीकृत की जाती हैं।

तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों की छात्राओं की व्यवसायिक रूचि के विज्ञान के संदर्भ में गणना की गई एवं 'टी' मूल्य 0.83 प्राप्त हुआ, जो (df – 58) 0.05 पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना H_2 विज्ञान के संदर्भ में स्वीकृत की जाती है।

तकनीकी एवं गैर तकनीकी महाविद्यालयों की छात्राओं की व्यवसायिक रूचि के अधिकारी के संदर्भ में गणना की गई एवं 'टी' मूल्य 0.31 प्राप्त हुआ, जो (df – 58) 0.05 पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना H_2 अधिकारी के संदर्भ में स्वीकृत की जाती है।

संदर्भित ग्रन्थ (References)

1. पाठक, पी.डी. (1976) – शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पेज नं. 20–23।
2. गेरेट, हेनरी ई. (1980) – शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी प्रकाशन, लुधियाना।
3. शर्मा, आर.एन. (1978) – व्यक्तित्व प्रकाशन, केदारनाथ रामनाथ, मेरठ, पृष्ठ 83–65।
4. गोड, एच.सी. (1973) – दिल्ली के विद्यालय के छात्रों की व्यवसायिक रूचि को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन। पी.एच.डी. थिसिस, आई.ओ.टी.टी., न्यू देहली, पृष्ठ 752।
5. बुच, एम.बी. (1972–78) – सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन।
6. टाउथसेंट, जे.सी. (1953) – प्रयोगात्मक विधियों का परिचय, मेल्थोहिल, अध्याय–6, पृष्ठ–32।
7. वर्मा, पी. और श्रीवास्तव, डी.एम. (1979) – आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पेज नं. 21–22।